ओं

॥ ईसुपरीक्षा ॥

पण्डित जगतनारायण
ने
सब आर्यों के हितार्थ प्रकाशित
की

ISUPARIKSHA.

BY

PANDIT JAGATNARAYAN

PRINTED BY PANDIT BISSUN DUTT THAKORE
& Co. VICTORIA PRESS, BENARES.
1884.

सवैया

सब काम तजो जगदीश भजो करुणा कर से दृढ़ ध्यान लगाओ। वही पार करे सब दुःख हरे जगदीश्वर को दिन रात मनाओ। सोये बहुकाल गये हो निढाल जरा अब भी कुछ औषधि खाओ। रक्षक सब को दे सुख हमको अव्यक्त मनाय के मृत्यु छुड़ाओ ॥ १ ॥

—•—

भजन ॥

पड़े क्यों भूल में गहरी—कहो जी क्या विचारा है। ज़रा तुम सोचो रे भाई कहां पर मन टहांरा है॥ १॥ विमुख निज देश से होकर जो चाहे निज उधारा है। नहीं पावे कहीं आदर ये आंखों से निहारा है॥ २॥ तजा मत वेद को जिसने असत मत मन में धारा है। मणि को कांच के बदले वृथा ही उसने हारा है॥ ३॥ हुऐ जो वेद के द्वेषि उन्हों ने धर्म मारा है। पुजाये द्रव्य अड़ना नानि के क्या मत प्रचारा है। जो चेतनका भी चेतन है उसे हा क्यों बिसारा है। नहीं कोई दुसरा रक्षक वही पापों का आरा है॥ जो है सब सृष्टि का कर्ता वही स्वामी हमारा है। भजो जगदीश को निश दिन नहीं उस बिन गुजारा है। नहीं जन्म और मरन उसका नहीं कुछ वारपारा है। नहीं वह इन्द्रियेगोचर ये निगमागम पुकारा है॥ रचा शशि सूर्य को जिसने निगम काज पर उतारा है। मैं हुं भाई उसका ही चेरा जो सब ही सहारा है॥ ८॥

भूमिका

इस छोटीसी पुस्तक के रचनेसे ग्रंथ का रका केवल यह अभिप्राय है कि हमारे आर्य्य भाइयों के जो विरुद्ध ईसाई मतके वास्तव विषयों का ज्ञान हो नित्य प्रति अनेक ज्ञान ईसाईयों के बचनों से भ्रांत हो अपने प्राचीन आर्य्य धर्म को परित्याग करते जाते हैं यदि एक आर्य्य भाई भी इस पर ध्यान देगा तो मै अपने परिश्रम को सफल जानूगा इस्से हमारा कदापि यह अभिप्राय नही है कि मैं ईसाइयो के धर्म पर आघात करूं मैने तो केवल अपने सच्चे हृदय से अपना अभिप्राय प्रगट किया है. निवेदन यह है कि विद्वान लोग केवल इसके तात्पर्य्य पर ध्यान देवें छन्द दोष को न देखें क्यों कि मैं कवि नही हूं ॥

आप लोगों का शुभचिंतक पं० जगतनारायण



॥ ईसु परीक्षा ॥

परमात्मने नमः

उदुत्यंजातवेदसंदेवं वहन्तिकेतवः। दृशेविश्वायसूर्य्यम्

दोहा ॥

अलख अगोचर अलख गति, अजर अमर अविकार
अटल अकाम अनादि अज, जग पालक करतार ॥
रसना एक अनेक गुण, कहं लगि कहों बखान।
मोहि अति दीन मलीनपर, द्रवहु सु कृपा निधान ॥

ईसाई लोग ईसा को साक्षात परमेश्वर जानते हैं पर इस में हमारे कई एक संदेह हैं

चौपाई।

कौन ईश औ कौन है ईसा तारक कौन कौन जगदीशा
मो में कहूं विविध परमाना वचनसुनो सबदे चितकाना

दोहा।

परिक्षा ईसा की करूं कहैं ईसाई ईश।
लक्षण ईसा ईश के कर विभाग गुण दीश ॥

पहिला संदेह यह है कि ईश्वर अजन्म है न किसी से पैदा हुआ न किसी से होवेगा और न वह देह सागर दुखों में आता है मगर अंजील में

तो ईश्वर अजन्म न रहा परंतु जन्म वाला हो गया क्योंकि ईसा बतौर आम पैदा हुआ और रजो दोष गर्भ में पिया और तमाम सामान मानुषत्व का साथ लाया और वैसाही बड़ा हुआ—सोता जागता फिरता रोता हंसता खाता पीता क्या ये सबचिज़ें मानुषत्व की उस में नहीं पाई जाती थीं जिसे ईश्वर समझा जाय॥

चौपाई।

ईश्वर जन्म रहत अविनाशी ईसा जन्म्यो भयो विनाशी
ईश्वर सुख स्वरूप है भाई, ईसा दुख से जान गंवाई

दोहा॥

ईसाई भगवत विमुख जन करें अनर्थ विचार
निराकार भगवान कों कहै ईसा अवतार॥

दूसरा सन्देह-यह है की ईश्वर सर्व शक्तिमान है याने सामर्थ वाला है परन्तु यह लक्षण ईसामें नहीं था क्योंकि जब ईसा सर्व शक्ति मान होता तब क्या प्रयोजन जन्म लेने और दुख उठाने का था क्या वह हमको और किसी तरह नबचा सकाथा जो सिवाय देह धारण के बिना कुछ भी नहीं कर सका—इसमें यह लक्षण ईसामें नहीं रहा जिससे वह ईश्वर समझाजाये॥

चौपाई ॥

ईश्वर जो चाहे सो करे। ईसा सुली दुखसे डरे
ईश्वर है सुतन्तरमुन भाई। ईसा परअधीन दुख पाई

फिर लुकाकी अंजील अध्याय २२ आयत ४१ से ४२ तक वहां से एक तीर दुरना हटने टेक कर यह प्रार्थना कि हे पिता यदि तेरी अभीमति हो तो यह पान पात्र मेरे निकट से दुर कर - देखो इस आयत सेईसा सामर्थ वाला साबित होता है परन्तु ईश्वर सर्व सामर्थी है--

—•—

वह है सर्व सामर्थीईश्वर। और अनंत बल है परमेश्वर हे प्यारे मित्रों ज़रा ख्याल करो अगर कुछ भी ईसा सामर्थ वाला होता तो यह न कहता के यह मौत का कटोरा मेरे निकट से दूर कर— भला जो आदमी आप अंधकार में पड़ा है वह दूसरों को कब अंधकार से दूर कर सकता है.

पर अधीन होवे जोकोइ। ताहिसामरथकहांसेहोइ

—•—

३सरा सन्देह- यह है के अंजील से भी ईश्वर होना साबित नहीं होता देखो योहना की अंजील अध्याय ५ आयत ३०- मैं आपसे आप कोई कर्म

नहीं कर सकता. जैसा में सुनता वैसाही विचार कर्त्ता और मे रा विचार यथार्थ है. क्योंकि मै अपनी बांछा न करके अपने प्रण कर्त्ताः पिताकी बांछा को चाहताहुं क्याइस आयत से ईश्वर होना साबित होताहै. और ख्याल करो योहना कीअंजील अध्याय ७ आयत १४ से १८ तक.

यहु दियों ने आश्चर्य ज्ञान करके कहा यह मनुष्य न पढ़के किसरीति ऐसा पंडित हुआ है. ईसा ने उत्तर दियायह मेराउपदेश नहीं है किन्तुजिसनेमुझे भेजा है उसका है—जो जन उसकी आज्ञा पालन करेगा मेरा उपदेश मुझसे है. वा ईश्वर स यह जान सकेगा अब इस आयत से ईसा ईश्वर है और देखो. योहना की अंजील आध्याय७ आयत २८

ईसाने महामंदिर मै उपदेश देते २ उचें शब्द से कहा तुम क्या मुझ को जानते हो,और मै कहांसे आया यहभी क्या जानतेहोमैआप सेनहीं आयाकिन्तु जो सत्यवादी है उसने ही मुझे भेजा है उसको तुम नहीं जानते. मै उसे जानताहुं फिर योहना की अंजील उध्याय १४ आयत २८ सें जाके दुसरी बार तुम्हारे निकट आउंगा मेरा यह कहा हुआ वचन तुमने सुनाहैः यदि तुम मुझ से प्रेम कर्ते मै पिता के निकट जाउंगा इस के कहने से तुम को आनंद होता क्योंकि मेरा पिता मुझ से बड़ा है इन आव

तों से साफ ज़ाहिर होता है कि ईसा ईश्वर नहीं है और ईसा खुद कहता है कि मेरा पिता मुझ से बड़ा है

दोहा

ईसा कहता मैं नहीं मेरा भी एक ईश
जिस ने मुझ को भेजा है वह मेरा जगदिश

—•—

४ था सन्देह यह है के ईसा क्रोधी भीया और बगैर सोचे विचारे सराप भी दे देता था और बुरा भाषन भी किया करता था भला यह भले पुर्षों के काम हैं के बुरे बचनों को मुखे निकालें देखो अंजील में कई जगह कुकर्मियों ऐसे २ बचन लिखे है—अरे दुष्टों अरे बेमानो,—और फिर ईसाई लोग कहते हैं के ईसा बड़ा दयालु था यह कहना उनका सर्व था मिथ्या है देखो मतिकी अंजील अध्याय २१ आयत १८ से २० तक जब वह प्रातः काल को नगर में आया तब उस को क्षुधा लगी बाट मे एक गूलर का वृक्ष देख कर उस के निकट गया परन्तु पत्रों के बिना उस में कुछ न पाने से उसी वृक्ष से कहा आज से तुझ में कभी फल न लगे: तुरन्त गूलर का वृक्ष सूख गया वाह यही दया ईसा में थी जो गूलर के वृक्ष से और आगे मरकस की अंजील की तरफ ख्याल किजीये अध्याय ३ आयत ५ उस ने उन के अंतः

करण की कठिन्ता के हेतु दुखीत हो कर क्रोध से उन सभोंकी ओर देखा और उस मनुष्य से कहा-बड़े अफ़सोस की बात है कि ईसाई अंजील की तरफ़ तो ध्यान नहीं देते वैसेहि बातें बनाते हैं अगर ईसा में कुच्छ भीदया होती तो बेचारेगूलर के वृक्ष को सराप न देता और अनाथ लोगों का कुच्छ तो ख्याल करता के भूखे फल खायेंगें और सायें में बैठें गें परन्तु ईसाने बिना सोचे विचारे खफ़ा होकर गूलर के वृक्ष को सराप दे दिया क्या गूलर के वृक्षने ईसा को देख कर फल छिपा लिया था जिस्से ईसा ने उसे सरापदिया और दूसरेतोईसा ज्ञानी भी नही ठहरा और ऐसाही दयालू था जो बिला वायस वृक्ष पर खफ़ा हुआ और गूलर के वृक्ष को सूखा दिया

दोहा ॥

काम क्रोध मद लोभ की जब लग मन में खान।
तब लग पंडित मुर्खों तुलसीएकसम ान ॥

५ वां सन्देह यह है कि ईसा छली भी था यह परमेश्वर के योग्य नहीं देखो एक जगह तो कहता है के लड़ाई करनी नहीं चाहियें और फिर आगे कहता है के लड़ाई करनी चाहिये देखो मती की

अंजील अध्याय ५ आयत ३८ नेत्रों के पलटे से नेत्र और दांतों के पलटे से दांत परन्तु मैं तुम से कहता हुं कि बुरे का सामना म कर जोकोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दुसरी गाल फेर दे, फिर मति को अंजील अध्याय २६ आयत ५२ तब ईसा ने कहा अपनीं तलवार मियान में कर क्यों कि जोलोग तलवार मारते हैं तलवार से मारे जायें अब फिर आज्ञा देता है लूका की अंजील अध्याय २२ आयत ३६ उस ने उन से कहा परन्तु अब जिस के पास थैली हो सो उसे लेले और वैसेहि झोली भी और जिस के पास तलवार न हो सो अपना वस्त्र बेच कर तलवार मोल ले फिर योहना कि अंजील अध्याय २ आयत १५ तब उसने डोरीका कोड़ा बना कर उन सभो को भेड़ों और बैलों समेत हैकल से निकाल दिया और बनियों की नगदी बिखरादी और तखते उलट दिये देखो इनआयतों से क्याईसा छली साबित नहीं होता है

चौपाई॥

ईश्वर छली नहीं है प्यारो।
ईसा छली साबित है यारो॥
छल करना छलियों का काम।
जिनका होता बुरा इनजाम॥

छल और कपट से दूर हो भाई ।
छल से कछू लाभ नहीं आई ॥

दोहा ॥

छल जो प्राणि करत हैं सो है बड़े नदान ।
अन्त को वोही पाते हैं घोर नरक अस्थान ॥

चौपाई

ईसा छली बहुत है भाई ॥ तेहि ईश्वर कहैं नर बौराई
छल की बात छली मैं होई ॥ ईश्वर मह छल कहे न कोई

६वां सन्देह यह है कि ईसा झूठा भी या और ईसाई लोग कहते हैं कि ईसा सत्य वादि या यह कहना उनका सर्वदा मिथ्या है देखो ईसा कहता कि है मैं तौरेत का एक अक्षर भी खंडन न करूंगा और तौरैत के दश हुक्मों में माता पिता की सेवा करना भी कहा है परन्तु ईसा ने इस आज्ञा का खंडन किया देखो योहना कि अंजील अध्याय २ आयत ४

पिछे दाख रस का अभाव हुआ तब ईसा कि माने कहा इन के पास शराब नहीं रही है ईसा ने कहा हे नारि तुझ से मेरा क्या संबन्ध है मेरा समय अब लग नहीं आया उस की माताने दासों से कहा के वह जो कहे सो करो उस स्थान में यहुदियों कि शु[illegible] करने की विवस्था के अनुसार एक मन जल

समावे एवे २ छः मटकै पत्थरके थे ईसाने उन्ह सब मट को को मुंह! मुंह भरा इस आयत से दो बातें पाई जाती हैं एक यह के ईसा इस आयत से साफ़ झूठा पाया जाता है क्योंके ईसा की माने जब कहा के इन के पास शराब नहीं रही तब ईसा ने कहा के मेरा अभी समय नहीं आया फिर उसी वक़्त मट कों में पानी भरवाया और शराब बनाई- दूसरी बात यह के ईसाने माताकि प्रतिष्टा जैसी को अंजील से साबित होगई देखो जब उस ने कहा के इन के पास शराब नहीं रही तब जवाब दिया के हे नारि तुझे मुझ से क्या संबध है परन्तु जैसी आ ज्ञा कर- ती वजा लाते मगर ईसा ने उलटी आज्ञा ईश्वर कि की क्यों के ईश्वर ने आज्ञा कि है के माता पिता की प्रतिष्टा करो ईसा ने ऐसा जबाव दिया के जिस को सुन्ने से ईसा का ईश्वर होना हर्गिज़ साबित नहीं होता—देखो लूका कि अंजील अध्याय८आयत२०— और कितनो ने उसे कह दिया केआप की माता और भाई बाहर खड़े हुए आप को देखना चाहते हैं उसने उन को उत्तर दिया के मेरी माता और यही लोग हैं जो ईश्वर का वचन सुन कर पालन करते हैं— अब मित्रो ज़रा ख्याल तो करो के जिस केगर्भ से नौ माह रहे वह मा न ठहरी और कहते हैं के ईश्वर का जो वचन सुनते हैं वह मेरी माता

है—भाईयोसत्य है अगर ऐसा न कहता तो क्या कहता यहां तो नये चेले मुंढ़रहा थाऔर नये मतकी जड़ कायम कर रखा था इसे देख कर यह कह दिया के मेरी माता कोई नहीं है—सत्य है

पीर पैगम्बर सब कि यह रीति।
स्वारथ लगे करैं सब प्रीति॥

देखो हमारे राजा रामचन्द्र जीको जोबडेधर्मातमा गुज़रे हैं उन्हो ने सिर्फ मात्र माता के कहने के अनुसार १४ चौदहबरस बन में रहनाऔरफलफुलखाना कबूल किया—अब यह पुरूष बेहतर हैं जिस ने अपने मात्र माता के खुशी पर अपने खुसीको त्याग दिया—या वह पुर्ष जो अपने खास मातासे इन्कार करताहै के मेरी माता वही है जो ईश्वर का बचनसुनतेहै और हालां के उन के पेट में नौ माह रहेऔर पैदा हुए—

चौपाई

तजै मात जो बिन अपराधू।दया वन्त तेहि गनहिं न साधू॥कौशीक कहूं दया युत होही—सुनि अति अचरज लागत मोही

और फिर लूका की अंजील अध्याय १८ आयत २० में खुद कहताहै के माता पिता का सनमान करना चाहिये और आप नहीं करता—

दोहा॥

कहते हैं करते नहीं सो तो बड़े लबार।
आखिर धक्का खायंगे साहेब के दरबार॥

७वां सन्देह यह है कि ईसा करामात भी नहीं रखता था और ईसाई लोग कहते हैं कि ईसा ने बड़ी २ करामात की हैं यह कहना उनका सर्वथा मिथ्या है देखो मर्कस की अंजील अध्याय ६ आयत ६ "कोई चमत्कार न दिखा सका"-फिर मती की अंजील अध्याय १६ आयत ४ दुष्ट लोगों को कोई चिन्ह नहीं दिया जावेगा-मरकस की अंजील अध्याय ५ आयत २ से १३ तक-देखिये जो कि ईसा ने करामात की है—१ मनुष्य जिसको भूत लगा था ईसा को दूर से देख के दौड़कर दंडवत की—और ऊंचे शब्द से चिल्ला के कहा हे सर्व परि ईश्वर के पुत्र युसु तेरे साथ मेरा क्या सम्बन्ध है मैं तुझको ईश्वर की सौं देता हूं तू मुझे दुख मत दे—उसने उसे कहा अरे अपवित्र भूत इस मनुष्य से दूर हो फिर उसने उसे पूछा तेरा क्या नाम है—उसने उत्तर दिया मेरा नाम सेना है इस लिये कि हम बहुत हैं इस देश की सीमा से हमको और कहीं न भेजो यह प्रार्थना की—उस समय पर्वत के समीप सूरों के

झुंड में आसरा लेने को हमें भेजो ईसा ने उन्हाँ तो होवे अपवित्र भूत बाहर निकल के सूरों के झुंड में पैठगये और वह सुरों का झुंड जो कम से कम [२०००] था दौड़ कर १ ऊंचे स्थान के किनारे पर से समुद्र में गिर कर मर गया सुरों के चरवाहे भाग के नगर और गाव में गये—वाह बड़ी करामात ईसा ने की है एक को तो अच्छा किया और हज़ारों का बलिदान दिया भला जब कयामत के दिन वह चरवाहा ईश्वर के सामने फरयादी होकर ईसा को गिरिफ़्तार करवावेगा तो फिर ईसा इतने सुर कहां से ला देवेगा जो चर वाहे को राज़ी करे क्योंकि ईश्वर न्याय कारी है॥

दोहा॥

करामत ईसा जो करी सो मैं कहो बखान।
एक को चंगा किया हज़ारों का बलदान ॥

८वां सन्देह यह है—कि ईसा पापी भी था देखो लूका की अंजील अध्याय ३ आयत २१—सब लोगों को डुबकी लेने के पीछे ईसा ने भी डुबकी लिया और प्रार्थना कर रहा था तब स्वर्ग खुल गया और पवित्र आत्मा देह कपूत की नाईं उस पर उतरा औ यह आकाश वाणी हुई तू मेरा प्रिया पुत्र

है मैं तुझ से अति प्रसन्न हूं—इस आयत से तीन बातें पाई जाती हैं—प्रथम तो यह कि पवित्र आत्मा को कोई और देह नहीं मिलती थी जो वह पशु याने कबूतर की शकल बना—

चौपाई

कपूत देह में आवन हारा। सोठहरा येजगत करतारा—ऐसा बचन सुनै को भाई छूटत हंसी मोहि रहा न जाई॥

दूसरा यह कि जब ईसा ने प्रार्थना की कि हे मेरे पिता यह कटोरा मौत का मेरे निकट से दूर कर—और फिर जब ईसा सूली दिया गया तब बड़े ज़ोर से चिल्ला कर कहा हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया—तब तो ईश्वर ने कुछ सहायता नहीं की-शायद तब ईसा से ईश्वर खफा हो गया होगा—३ बात यह है कि अगर नदियों के स्नान करने से स्वर्ग खुल जावेगा तो फिर हिन्दू लोगों को ईसा की कुछ ज़रूरत न रही क्योंकि ईसा ने आप एक छोटी सी नदी से स्वर्ग पाया तो हिन्दू लोग तो बड़ी नदी गंगा में नहाते हैं इनको भी ज़रूर स्वर्ग मिलेगा क्योंकि यरदन से गंगा बहुत बड़ी है—अब ऐ ईसाई भाइयों तुम ज़रा ख्याल तो करो कि तुम्हारे गुरू ने खुद नदी के वसीले से स्वर्ग पाया अब तुम कोभी ज़रूर चाहिये कि गं गास्नान

कर के शीघ्र स्वर्ग को प्राप्ति करो क्योंकि यरदन से गंगा का जल भी अच्छा है ॥

८ वां संदेह यह है कि ईसाई लोग ईसा को निश्कलंक अवतार कहा करते हैं—परन्तु यह कहना इनका सर्वथा मिथ्या है—देखो ईसा को तो दो कलंक बड़े भारी लगे हैं—एक तो कुंवारी से पैदा होना दूसरा सूली पर प्राण देना ॥

चौपाई

ईश्वर निश्कलंक है गायो ।
बड़ कलंक ईसा पर छायो ॥
कुंवारी से जो उतपत होवे ।
पुन सूली पर प्रान जो खोवे ॥
दो कलंक यह हैं अतिभारी ।
निश्कलंक इक है करतारी ॥
मताड़न दंड ईश्वर पर होई ।
दुर्गति अति ईसा की होई ॥

दोहा

कांटो का सिर मुकट धर मार बेंतोंकी खाय ।
थूका पुनः युहूदियों तिस को कहैं खोदाय ॥

हे प्यारे भाइयो देखो अंजील मर्कस की अध्याय १५—आयत १६ से २० तक—उन्हों ने उसे

वस्त्र बहिराए और कांटो का टोप बना के उस के सिर पर रक्खा और उसे प्रणाम कर के कहने लगे हे यहूदियों के राजा तुझे नमस्कार—और उस के सिर पर बेंतों की मार मारते थे और उसके अंग पर थूकते थे—बड़ाही शोक है—

१०वां संदेह यह है कि ईसाई लोग यह कहा करते हैं कि ईसा संसार के लिये बलिदान हुआ और संसार के पाप लेगया परन्तु इस बात पर हमारे के एक दलीलें हैं—१ दलील यह है कि ईश्वर का न्याय करना स्वभाव है—इस को तो सब मानते हैं—अबमैं यह पूछता हूं कि ईश्वर का न्यारो फक्त संसारके साथ हैं या कि पुत्र के साथ हैं—अगर कहो कि पुत्र के साथ भी है तो ईश्वर न्यायकारी न हुआ क्योंकि बाइबिल में लिखा है कि एक पापकी सज़ा अब तक नरक है फिर ईसाने सब संसार के पाप उठाए उसको फ़क्त तीनही दिन की सज़ा मिली इससे तो ईश्वर तरफ़दार होगया न के न्यायकारी—और अगर कहो कि फ़क्त संसार के साथही है तब हम यह कहेंगे कि फिर भी ईश्वर न्यायकारी न हुआ क्योंकि ईसा भी मानुषत्व रखता था और अपनी मां मरीयम के गर्भ में रहा फिर उसको कुछ सज़ा न हुई इससे तो ई-

श्वर अन्य ई ठहरा—दूसरी दलील यह है कि जो पुरुष आगे बढ़ हो चुके हैं क्या वह भी बलीदान हुए हैं जैसे कि पंजाब देश मे बहुत से सीख लोगों ने गाय के रक्षा के लिये कसाई लोगों को बध किया और फिर सब तोप से उड़ाये गये—और मुसलमानों के राज मे बहुत से हिन्दू मारे जातेथे औरदेश यूनान मे सुकरात हकीम ज़हर से बद किया गयाथा क्या यह सब बलिदान हुये या नहीं-और अगर ठीकहैतो इसको भी मानो और अगर कहो कि फ़क्त ईसाही बलिदान हुआ क्योंकि वह निश पाप था तब हम पूछते हैं कि ईसातो पापी बनाही हैक्योंकि जो आदमकी वंश है वह सब के सब पापी हैं तो फिर जब आदम पापी है तो आदम की वंशमें मरयमभी हैतो फिर मरयमभीपापी ठहरी जब मरयमहीपापीतो फिरईसाकेपापी होने मे कोई संदेह नहीं रहाऔर फिर मती कीअंजील के अध्याय १९ आयत १७ मे ईसाकहता हैकि मैं परम नहीं हूं देखो मतीअध्याय १९ आयत १७ तब एक जनने आके उससे पूछा हे परम गुरु सदा का जीवन मिलने के लिये मुझे क्या २ सत्कर्म करना होगा उसने उससे कहा तू मुझे परम क्यों कहता है ईश्वर के बिना कोई परम नहीं है-परन्तु तू यदि परमायु पाने की बांछा करे

तो सब आज्ञाओं का पालन कर देखो यहां पर ईसा परम याने निश्च पाप होंनेसे]इनकार करता है और फिर जौनार में ईसा ने शराब बनाई और सब ने पी-अब क्या शराब बनाना पाप नहीं है और फिर अगर कहोकि यह भी बलिदान हो गया तो भी बलिदान झूठा ठहरा और ईसा पर विश्वास लाने की कुछ ज़रूरत न रही-२ दलील यह है कि ईसा सलिब अपनी इच्छा से हुआ या ज़बरदस्ती से अगर कहोकि अपने इच्छासे तो यह कहना आप लोगों का मिथ्या है क्योंकि चारो अंजीलों से पाया जाता है कि ईसा मरना नहीं चाहता था- देखो मती की अंजील अध्याय २६ आयत ३८ से ४० तक शोक और अत्यन्त दुःखित होने लगा और उसने उससे कहा, मरने की नाई मेरे प्राण को अत्यन्त दुःख होता है :—और देखो मर्कस की अंजील अध्याय १४ आयत ३४ से ३६ तक,, परन्तु अत्यन्त त्रास युक्त और व्याकुल होने लगा और उस ने कहा मृत्यु काल की नाई मेरा प्राण शोक करता है—फिर लूका की अंजील अध्याय २२ आयत ४२ हे पिता यदि तेरा अभीमत होवे तो यह पान पात्र मेरे निकट से दूर करो :— फिर योहना की अं-

जील अध्याय १२ आयत २७ अब मेरा प्राण व्याकुल होता है और मैं क्या कहूंगा हे पिता:ऐसे दुःख समय में मेरी रक्षा कर-अब प्यारे मित्रो अगर ईसा संसार के पापों के लिये पहले से ही बलिदान होने को ईश्वर की तरफ़ से आया होता तो इतना मरने से न घबराता और ईश्वर से अपने बलिदान न होने की प्रार्थना न करता कि हे पिता यह पानपात्र मेरे निकट से दूर कर—परन्तु ईसायों को यहूदा ईष्करियोती का बड़ा गुण मानना चाहिये कि वह ईसा के बलिदान का कारण हुआ जिस के वजह से ईसायों को मुक्ति होगी अगर वह ईसा को न पकड़वाता और वध न करवाता तो फिर मुक्ति क्योंकर होती क्योंकि मुझे विश्वास है के ईसा आप अपने को कदापि न मार डालता और आत्मघात न करता क्योंकि वह मरना चाहता भी नहीं था और आत्मघात करना भी पाप है और फिर अगर ईसा बलिदान के लिये संसार में आया था तो फिर वह अपने पकड़वाने वाले को क्यों बुरा कहता है देखो मती की अंजील अध्याय २६ आयत २४, हाय हाय यदि उसजन का जन्म न होता तो उसके लिये भला था फिर मर्कस की अंजील अध्याय १४ आयत २१,,

हाय हाय उसका जन्म होना भला न था-फिर लूका की अंजील अध्याय २२ आयत २२ परन्तु जो जन उसको पराए हाथ सौंपेगा उसको संताप होगा। अबप्यारेमित्रोदेखो इनआयतोंसेक्या ईसा बलिदान होना चाहता था-फिर और देखो मत्ती की अंजील अध्याय २७ आयत ४६ तीन पहर के समय ईसा ने चिंघाड़ के कहा हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू क्यों मुझे त्याग करता हैं, अब देखो ईसा का बलिदान होना अपने इच्छासे इन आयतों से पाया जाता है-हे प्यारे मित्रो ईसा कदापि अपने इच्छा से ब-लिदान नहीं हुआकि इनके पाप उठाऊं अगर यह समझ के होता तो कदापी किसी को बुरा न कहता और चिल्लाकर प्राण न देता और अगर कहो कि जबरदस्ती से तो बलिदान न रहा ४ दलील यह है आदमी को सज़ा इसवास्ते दी जाती है कि उसने पाप किया अब ईसा सारे संसार के पाप ले गया उसको कुछ भी सज़ा न हुई हां अगर ईसा को कुछ भी सज़ा होती तब हम समझते कि हमारे पापोंकी सज़ा पाई और अगर कुछ दुःख पाया भी तो अपने पापों के लिये सज़ा पाई जैसे कि हम पीछे ज़ाहिर कर चुके हैं उसकेबदलेसज़ापाईहोगी ५ दलीलयहहै

कि अगर ईसा बलिदान हुआ और तमाम संसार के पाप ले गया तो फिर नेकी करने को क्यों कहा जब नेकी करेंगे तो फिर ईसा की क्या ज़रूरत रही।

६वीं दलील बड़े अफ़सोस की बात है कि चोरी तो देवदत्त करे और सज़ा जगदत्त को दी जाय इससे तो आपका ईश्वर सर्वज्ञानी नहीं रहा परन्तु ईश्वर सर्वज्ञानी है।

चौपाई

परब्रह्म परमेश्वर स्वामी -है घट घट का अन्तरयामी।
सर्वदेशी और सर्वव्यापी-वह है अनन्तज्ञानी भी आपी॥

परन्तु यह लक्षण आपके ईश्वर में न रहा। क्योंकि वह वकील की भी ज़रूरत रखता है तो सि-फ़ारशपसन्द हुआ क्योंकि ऐसा न होता तो उसको क्या ज़रूरत ईसा की थी जो ईसाइयों का वकील है अपने पास रखने को जिसको कि दाहिने हाथ बैठा रखा है और वह सिफ़ारश करता है इससे तो सिफ़ारश करने वाला भी बेइनसाफ़ और मानने वाला भी बेइनसाफ़ हुआ क्योंकि निस्पापी को सिफ़ारश करके सज़ा दिलावे और मानने वाला इसवास्ते अन्यायकारी है कि वह सिफ़ारस करनेवाले की सिफ़ारश को मान कर अन्यायी को हाथसे छोड़ देता है जैसे कि ईसाइयों

का ख्याल है के ईसा हमारे वास्ते सिफारिश करेगा और ईश्वर मान लेगा और हमकों बख्श देगा ॥

चौपाई

ये नहि न्यायकह्यावेजन्यो। यहतो अतिअंधेरे कोधंधो॥
तनप्रकाश एकसमन होई। सुधागरल कह कहेनकोई ॥

११वां सन्देह यह है के ईसा तो अपने किसमत को पूरा करने के वास्ते आया था देखो ईसायानबी अपनीकिताब में लिखता है अध्याय ७ आयत १४ इसलिये परमेश्वर तुमको एक लक्षण देगा देखो एक कुआंरी गर्भिणी होगी औरबेटा जनेगी औरउसका नाम इम्मानुएल (Immanual) रखेगीवह दही और मधु खायगा जबलों वह बुरे के छोड़ने का और भलेको चुन लेने का ज्ञानप्राप्त न करे-और फिर लोगों के हाथ से दुःख उठावेगा इसआयत से दो बातें पाई जाती हैं एकतो यह कि ईसा को कुछ ज्ञान भीनथा दूसरा यह कि ईसा के किसमत में सात सौ बरस पहलेहीईश्वर नेईसाया नबी को खबर दी कि ईसा दुःख उठावेगा फिर यहूदा का क्या खता औरा ईसाईयों का भरोसा भी झूंठा और फिरमुक्तिभी कहां रही क्योंकि ईसा तो अपने किसमत को पूरा करने के लियेआया था॥

दोहा

जाहो ते कुछ पाइए करिये ताको आस।
रीत सर वर पै गये कैसे बुझत पयास॥

ईसा तो आया जग में हमारे न वास्ते। ईसायानवी कहता है वह किसमत के वास्ते॥ अब ऐ मेरे प्यारे ईसाई भाईयो सत्य का ग्रहण करो और झूठे ख्यालों को दिल से दूर करो क्योंकि ज़िन्दगी का कुछ ठकाना नहीं है॥

चौपाई

सब ते विनय करों कर जोरी।
मानहु सत्य वचन यह मोरी॥
बंधु प्रतीति ईश्वर पर लावों।
जेहिते मुक्ति पदारथ पावों॥
सकल नरक पीड़ा से बचिहौ।
सदा स्वर्ग में हरनित बसियौ॥

प्रार्थना

हे ईश्वर सर्व शक्तिमान जगदीश्वर तू अपनी कृपा कटाक्ष इन ईसाई भाइयों पर कर जो बड़े अंधकार में पड़े हैं सत्य की तरफ आजावें जिसमें न चोरी है न शंका और तेरे पवित्र वेद की आज्ञों पर चलें और अंत को मुक्त प्राप्त करें॥

ओम

कवित

ईसामसीह आये एक धर्म धुज धारवेको १
वरन वीगारवेको कासर कसी रही २
नीचनकी सावीसुसाहेवी गलीजनकी ३
राम नाम मेट के सलामसी धसीरही ४
वेदनको खंड मंड अपनो पखंड धरे ५
औरकी नमाने आन अपनी बसी रही ६
पुर्व निकाखी असीरस नाससेट लीनी ७
ईसा तो नहीसा मसी दांतन फंसी रही ८

भजन

इच्छा क्या तुमको ऐ यारो कहीकर्ता बुद्धि कारो है।
जोहै सब सृष्टि का करता न उसमें रति तुम्हारी है॥
वहिर्मुख होके स्वामी से हुए कॅत्रा और के सेवक।
गये हा भूल कर्ता को ये कैसी रति धारी है॥
बनो तुम दास भगवत के जो है फल चारका दाता।
बनाकर सूर्य शशि जिसने रची यह सृष्टि सारी है॥
नहीं हैं इन्द्रिया उसको नहीं वह इन्द्रिये गोचर।
न उसका जन्म और मृत्यु वह अव्यय निर्विकारी है।
कृपा कर अपने भक्तों कोजोअक्षय फल का है दाता।
उसी की आज्ञापालन करें तो गति हमारी है॥
समान उसके नहीकोई अधिकका भावहोकेंराकर।
पुरुष परमात्मा अक्षय नियंता न्यायकारी है॥
रहितविभुहगमिरासेहै निरञ्जनजो कि सुखराशी।

नहीं माता पिता उसके नहीं सुत बन्धु नारी है ॥
किया है वेद को जिसने प्रकाशित हृदय ब्रह्मा के ।
बिना उसके नहीं कोई हमारा दुःख हारी है ॥
बचो हिंसा से तुम सम्यक् न दुखदो देहधारी को।
सताना जीव का यारो बहुतहि पाप भारी है ॥
करो दो काल की सन्ध्या फिर मत धर्म के पथ से।
अनादि काल से सिष्टों में यह सन मार्ग जारी है ॥
नहीं है ब्रह्म से अति रिक्त कोई योग्य पूजा के ।
भजे जो अन्य देवों को गई मति उनकी मारी है ॥
कृपा जिसकी से देवादिक हुए हैं अपपदगामी ।
जगन्नाथ अपने तनमनसे उसी प्रभुका भिखारी है ॥

निवेदन ॥

जिन महाशयों का इसके ग्रहण की इच्छा हो वह मेरे पास मूल्य डाक व्यय सहित भेज कर मंगालें डाक व्यए सहित ⁄)॥

पण्डित जगतनारायण आर्य्य
अनाथ स्कूल दशाश्वमेध बनारस

